14

भित्तिचित्र एवं छापाचित्र

पिछले अध्याय में हमने सूखे माध्यमों से चित्रण एवं रेखांकन के बारे में जाना। प्रस्तुत पाठ में हम भित्तिचित्र एवं छापाचित्र के बारे में जानेंगे। प्रकृति की सभी कृतियों में मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। इसमें सोचने-समझने और सृजन करने की शक्ति संसार के अन्य प्राणियों की तुलना में अधिक है। मनुष्य के इस स्वभाव ने ही संसार में कला को जन्म दिया है। कला मानव की सहज अभिवयक्ति है। कला के इतिहास और उसके विकास की प्रक्रिया को जानना हो तो गुफाओं; जैसे- मध्यप्रदेश स्थित भीमबेटका में पत्थरों पर बने कलाचित्र या फिर दक्षिण फ्रांस में शूआवे गुफाओं की चित्रकला से लगाया जा सकता है।

भित्तिचित्र का सृजन कला के आरंभ से ही होता रहा है, पर आधुनिक कलाकारों ने इसमें नए आयाम जोड़ दिए हैं। दीवार पर बनाया गया चित्र अथवा पट या फलक पर बनाकर दीवार पर स्थायी रूप से जोड़ा गया चित्र, भित्तिचित्र की श्रेणी में आता है। इसके प्रमुख माध्यम फ्रैस्को, टेंपरा, तैलचित्र, पच्चीकारी व रंगीन कांच से बने चित्र हैं। इन माध्यमों के द्वारा चित्र को स्थायी रूप से भित्ति पर बनाया अथवा स्थापित कर दिया जाता है।

भित्ति तकनीक का उद्भव एवं विकास मुख्यत: गुफाओं में की गई चित्रकला में ही हुआ है। हम इस बात का अनुमान मध्यप्रदेश में भीमबेटका और शोवे (दक्षिण फ्रांस) के गुफा चित्रों से लगा सकते हैं।

छापाचित्रण सदियों पुरानी तकनीक है। जिसकी जड़ें लोककला में पाई जाती हैं। इसका प्रयोग आम जन विभिन्न पारंपरिक उत्सवों एवं अनुष्ठानों की तैयारी के लिए किया करते थे। वे अपने घरों की दीवार, मिट्टी के बर्तन, वस्त्रों आदि पर इस विधा का प्रयोग किया करते थे। इस कलाकृति में प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल होता है। इन्हें हथेली अथवा उंगलियों की मदद से दीवारों और ज़मीन पर छाप लिया जाता है। धीरे-धीरे लोग विभिन्न सब्जियों, मिट्टी, पत्थर और लकड़ी के ठप्पे यानी ब्लॉक बनाने लगे। फिर ब्लॉक पर उपलब्ध रंग लगाकर छापने लगे। इस विधि द्वारा कम समय में समान आकृतियों के आलेख से युक्त विभिन्न वस्तुएँ तैयार हो जाती हैं। हाथ एवं

पैर के अंगूठे अथवा पंजे के द्वारा छाप लगाकर घरों की दीवारों एवं वस्त्रों को सजाया जाता था। कुछ युगों के गुजरने के बाद छापाचित्रण, वस्त्र छापाचित्रण, तकनीक के रूप में विकसित हुआ। इसका विकास किताबों और डाक्युमेंट को छापने के लिए भी हुआ।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप :

- चित्र बनाने की तकनीकों का वर्णन कर सकेंगे;
- चित्र बनाने के लिए विभिन्न माध्यमों के बारे में उल्लेख कर सकेंगे;
- इन तकनीकों के अंतर और प्रयुक्त संसाधनों को प्रस्तुत कर सकेंगे;
- इन तकनीकों को अपनाकर चित्र बनाने में समर्थ होंगे;
- सृजनात्मक कौशल का विकास कर सकेंगे;
- अजंता की गुफाओं की चित्रकला की सराहना कर सकेंगे।

14.1 भित्तिचित्र- अजंता

प्रिय शिक्षार्थी, सबसे पहले भित्तिचित्र के बारे में जानते हैं।

बुनियादी सूचना

अंजता की गुफाएँ पहली बार 1819 में दुनिया की नज़र में आयी जब एक अंग्रेज फौजी जॉन स्मिथ अचानक ही गुफा नंबर 10 के सामने जा पहुँचा। उस समय वह बाघ का शिकार कर रहा था। कुछ ही दशकों में गुफाएँ अपनी अनूठी चित्रकारी के लिए प्रसिद्ध हो गईं। इन गुफाओं की खुदाई अलग-अलग कालों में की गई थी (दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से छठी शताब्दी ईस्वी) चट्टान की सतह के घोड़े की नाल के आकार के मोड़ में अजंता में कुल 29 गुफाएँ हैं। परन्तु 30वीं गुफा अपूर्ण एवं सबसे छोटी है, जिसमें कोई चित्र नहीं बनाया गया है। ये गुफाएँ दो प्रकार की हैं- पहली चैत्य गुफाएँ, जहाँ धार्मिक क्रियाकलाप; जैसे- पूजा एवं धर्मोपदेश होते थे। ये मुख्यत: 9, 10, 19, 26 एवं 29वीं गुफाएँ हैं। दूसरी- विहार गुफाएँ, जहाँ बौद्ध भिक्षु निवास किया करते थे। यद्यपि यहाँ सभी गुफाएँ चित्रित थीं, परन्तु लंबे समय तक संरक्षण के अभाव में ये चित्र नष्ट हो गए हैं। केवल गुफा संख्या 1, 2, 9, 11, 16 एवं 17 में ही भित्तिचित्र बचे हैं। बाकी उपेक्षा और समय के कारण नष्ट हो गए हैं। गुफाओं की छतों, दीवारों और स्तंभों पर चित्रों के सामान्य विषय; विभिन्न जातक कहानियों, बोधिसत्व (जो निर्वाण तक पहुँचने में देरी करता है) और बुद्ध के जीवन से जुड़ी घटनाओं आदि का चित्रण है। छत की सजावट में हमेशा सजावटी पैटर्न ज्यामितीय और पुष्प शामिल होते हैं। विषयों की विविधता, चित्रों में विवरण, रॉक कटिंग में निपुणता आदि

वास्तुकला की कुशलता से पता चलता है कि इसे त्यागने से पहले भिक्षु दुनिया को और जीवन धारा को जानते हैं।

चित्र 14.1: पद्मपाणि बोधिसत्व

शीर्षक	:	**पदम्पाणि बोधिसत्व**
माध्यम	:	दीवार पर मिट्टी का प्लास्टर और प्राकृतिक रंग
आकार	:	174 सेमी.
समय	:	लगभग दूसरी से छठी सदी
संग्रह	:	गुफा संख्या एक, अजंता औरंगाबाद, महाराष्ट्र
भित्तिचित्र	:	पद्मपाणि बोधिसत्व

सामान्य विवरण

मानव आकार के बराबर गुफा-1 का यह उत्कृष्ट एवं विशाल भित्तिचित्र भारतीय चित्रकला का एक महान उदाहरण है। वह मोती, नीलम, लापीस लाजुली और अन्य रत्नों से सजाया गया है। हाथ में नीलकमल लिए विश्वचिंतन, त्याग, वैराग्य एवं शांति का भाव तथागत भगवान बुद्ध के मुखमंडल पर स्पष्टत: परिलक्षित हो रहा है। उनका नाम पद्मापानी है, संस्कृत में पद्मा कमल का फूल है और पानी हाथ है। शांत चित्त एवं नीचे की ओर ध्यानमग्न नेत्र तथागत के मनोभाव को ऐसे प्रतिबिंबित कर रहे हैं जैसे वे सांसारिक कष्टों के प्रति चिंतित हैं। उनका निवारण करने के लिए वे दृढ़ संकल्पित हैं। हीरे, मोती और जवाहरात से सुसज्जित बोधिसत्व की यह तस्वीर वैभवपूर्ण है। मोतियों से जड़ित सुंदर मुकुट अपने आपमें अद्वितीय हैं। मुकुट उनका राजवंशी होने का प्रतीक है। गले में मोतियों की माला जिसमें कुछ अंतराल पर नीले मनके एवं बीच में एक बड़ा नीला मनका, चित्रकारों ने बड़े सुन्दर ढंग से चित्रित किया है। लय-बद्ध रेखाएँ, वैविध्यपूर्ण एवं संयमित रंग-योजना, हस्त-मुद्रा एवं भाव-प्रवीणता, अलंकरण एवं संयोजन आदि में चित्रकार ने संपूर्ण कौशल का परिचय दिया है। उनकी आध्यात्मिक जागृति का प्रतिनिधित्व करता है। उनका शान्त सुंदरा चेहरा, आनुपातिक शरीर और उनका रुख बोधिसत्व के आदर्शों द्वारा स्थापित परिष्कृत मनुष्य के आदरों की पुष्टि करता है। सामंजस्यपूर्ण रेखाएँ, गहना और पृथ्वी के स्तरों का संयोजन, भित्तिचित्र की रचना की निपुण शैली को प्रदर्शित करता है। भित्ति चित्र सतह बनाने के लिए हथौड़ा और छेनी चट्टानी मिट्टी या रेत के साथ मिश्रित मिट्टी, वनस्पति फाइबर, धान की भूसी, घास, चूना, गोंद, खनिज रंग और वनस्पति रंग की आवश्यकता होती है।

शिल्पियों द्वारा पत्थर की गुफाओं को छैनी एवं हथौड़े से काटकर सपाट दीवार बनाई गई है। पत्थर का बारीक चूरा, गोबर एवं धान की भूसी आदि मिलाकर उससे दीवार पर लेप किया गया है। इसके बाद बारीक चट्टानी पाउडर या रेत और बारीक रेशेदार वनस्पति सामग्री के साथ मिश्रित मिट्टी का दूसरा लेप लगाया जाता है। लेप के ऊपर चूने का पलस्तर चढ़ाया गया है। इस प्रकार तैयार की गई गीली दीवार पर रूप-रेखाएँ खींची गई, फिर रिक्त स्थान को रंग द्वारा भर दिया गया है। इसके उपरांत विभिन्न खनिज एवं वनस्पति रंगों से चित्रकार द्वारा कुशल चित्रण किया गया है।

अजंता के चित्रकारों के पास गिने-चुने रंग उपलब्ध थे। ये रंग मिट्टी एवं पत्थर द्वारा बनाए जाते थे जिसमें गेरू से लाल एवं गेरूआ, खड़िया अथवा चूने से सफेद, नील से नीला, ट्रैरावर्ट पत्थर से नीबू, काओलिन जिप्सम तक भिन्न-भिन्न रंग होते हैं। वनस्पति रंगों का भी प्रयोग हुआ है।

पाठगत प्रश्न 14.1

1. अजंता में कुल कितनी गुफाएँ हैं?

   (i) 30 गुफाएँ (i) 20 गुफाएँ

   (iii) 10 गुफाएँ (iv) 5 गुफाएँ

2. भित्ति का माध्यम क्या है?

(i) वाश (ii) टेंपरा

(iii) स्याही (iv) ये सभी

14.2 छापाचित्र

हमने भित्तिकला के बारे में जान लिया है। आइए, अब ब्लॉक प्रिंटिंग के बारे में जानते हैं।

सामान्य परिचय

छपाई के छापे विभिन्न सामग्री; जैसे- लकड़ी, रबड़ मोम, साबुन आदि से बनाए जाते हैं। उनकी सपाट सतह पर आवश्यकतानुसार आकृति बनाकर उन्हें छपाई के लिए तैयार किया जाता है। छपाई के लिए सामान्यत: काली अथवा रंगीन स्याही का प्रयोग किया जाता है। छापों का प्रयोग उन्हें

चित्र 14.2: शीर्षक रहित लिनोकट

बनाई गई सामग्री के अनुसार दीर्घकाल तक किया जा सकता है। इनके द्वारा बहुत कम समय में हज़ारों की संख्या में चित्र छापे जा सकते हैं। इस विधि की विशेषता यह है कि सभी चित्रों में एकरूपता रहती है। बधाई संदेश, गिफ्ट, बॉक्स, पेपर बैग, लैंप शैड, कापियों की ज़िल्द एवं अन्य क्राफ्ट की वस्तुएँ छापा द्वारा तैयार कर सकते हैं। छपाई की इस प्रक्रिया में चित्रों को अलग से बार-बार अंतिम रूप देने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

शीर्षक	:	**लिनोकट**
माध्यम	:	लिनोकट द्वारा छापा चित्रण
समय	:	समकालीन
चित्रकार	:	अज्ञात
संग्रह	:	व्यक्तिगत

सामान्य विवरण

इस छापाचित्र में फूल-पत्तियों, कलियों एवं बेल-बूटों आदि को लयबद्ध कर आलेखन के सुंदरतम रूप में चित्रित किया गया है। रेखाएँ, वृत्त, ज्यामितीय आकृतियों को संयोजित कर इस प्रकार संतुलन है कि छपाई के उपरांत त्रिआयामी दृश्य का बोध कराता है। एक से अधिक रंगों के प्रयोग से जीवंतता है। मुद्रण के लिए डिजाइन को लिनोलियम ब्लॉक पर उकेरा गया है। एक बार नक्काशीदार सतह को रंग के संपर्क में लाया जाता है, फिर छाप बनाने के लिए ब्लॉक को ड्राइंग शीट पर धीरे से दबाया जाता है और फिर उठा लिया जाता है।

पाठगत प्रश्न 14.2

1. छपाई की तकनीक में छापे किस सामग्री के बने होते हैं?
2. छपाई के इन साँचों का प्रयोग कितने समय तक किया जा सकता है?
3. छपाई की तकनीक में चित्र को कितनी बार में अंतिम रूप दे दिया जाता है?

14.3 सब्जियों द्वारा छापाचित्रण

अब, आप एक बहुत ही रोचक कलाकृति - 'सब्जियों के माध्यम से छपाई' के बारे में जानेंगे।

सामान्य परिचय

इस तकनीक का प्रयोग हम ऐसे चित्र बनाने में करते हैं जहाँ एक ही तरह की आकृति को बार-बार दोहराना पड़ता है, परन्तु दोहराई गई आकृतियों में हल्का परिवर्तन स्वीकार्य होता है। ऐसे में हम विभिन्न सब्जियों; जैसे- आलू, भिंडी, शिमला मिर्च, प्याज, कमल-ककड़ी ज़िमीकंद, शकरकंदी

आदि को बीच से काटकर छापे अथवा ठप्पा के रूप में प्रयोग करते हैं। इस तकनीक में काटी हुई सब्जियों से बनी आकृति का बार-बार उपयोग कर समान आकृतियाँ छाप सकते हैं। इस प्रकार छापी गई आकृतियों में एकरूपता रहती है पर समरूपता नहीं होती। उदाहरण के लिए भिंडी अथवा शिमला मिर्च को उचित स्थान से काट कर उनके द्वारा फूलों की सुंदर आकृतियाँ छापी जा सकती हैं और इनकी सहायता से सुंदर चित्र बनाया जा सकता है। किसी आलेखन, आकृति अथवा भाषा लिपि की छपाई के लिए एक बड़ा आलू बीच से काट कर उसकी समतल सतह पर चाकू द्वारा वांछित आकृति उकेर कर उसका ठप्पे के रूप में बार-बार प्रयोग कर सुंदर चित्र बनाए जा सकते हैं। भाषा लिपि की छपाई के संदर्भ में उल्टी लिपि उकेरनी पड़ती है ताकि छपाई के बाद सीधी लिपि प्राप्त हो सके।

चित्र 14.3: सब्जियों के माध्यम से छपाई

शीर्षक	:	**सब्जियों द्वारा छापाचित्रण**
माध्यम	:	सब्जियाँ
समय	:	समकालीन
चित्रकार	:	अज्ञात
संग्रह	:	व्यक्तिगत

सामान्य विवरण

प्रस्तुत चित्र विभिन्न पुष्प, पत्ती और जानवरों की आकृतियों को मिलाकर बनाई गई है। इसके लिए भिंडी, आलू एवं शिमला मिर्च को दो भागों में काटकर विभिन्न प्रकार के ठप्पे बनाए गए हैं। इन ठप्पों के द्वारा बनाई गई फूल एवं पत्तियाँ सुन्दर एवं आकर्षक दिखाई दे रही हैं। इनकी स्वाभाविक एवं प्राकृतिक बनावट इस तकनीक की सहजता को प्रकट करती है। सर्वप्रथम भिंडी, कमल-ककड़ी, टमाटर एवं शिमला मिर्च को क्रॉस सेक्शन किया गया तथा छापे के लिए तैयार किया गया है। अब आवश्यकतानुसार कटी सतह पर रंग में डुबोया और पेपर शीट पर छापे लगाए गये हैं। आलू को काटकर पत्ती के आकार का छापा तैयार कर और रंग लगाकर छापे लगाए गए हैं। भाषा लिपि की छपाई के लिए कटे हुए आलू के समतल भाग पर चाकू से उल्टी लिपि लेने के उपरांत उसकी सतह पर रंग लगाकर छापे लगाए गए हैं। इस तरह माँ शब्द का छापा तैयार किया गया है। शिमला मिर्च के द्वारा लगाये गये छापों को ब्रश की सहायता से सुंदर कछुओं की आकृति में परिवर्तित कर दिया गया है। पौधों की छवियाँ बनाने के लिए फूलों और पत्तियों के आकार को जोड़ने के लिए पेंट और ब्रश का उपयोग कियाा गया।

पाठगत प्रश्न 14.3

1. इस तकनीक से चित्र बनाने में समय कम कैसे लगता है?

2. भाषा लिपि छापने के लिए किस सब्जी का प्रयोग किया जाता है?

14.4 अंगूठे एवं उंगलियों द्वारा छापा चित्रण

आइए, अब हम अंगूठे और अँगुलियों की मदद से चित्र बनाना सीखें।

सामान्य परिचय

इस तकनीक में हाथ के अँगूठे अथवा अँगलियों की छाप द्वारा चित्र बनाए जाते हैं। इसमें सामान्यतः स्याही, जलरंग, तैल रंग, पोस्टर अथवा एक्रायलिक रंगों का प्रयोग करते हैं। इसके अंतर्गत अँगूठे अथवा अँगुली पर स्याही अथवा रंग लगाकर चित्र बनाने वाले स्थान पर छाप लगा दिए जाते हैं। इसमें आवश्यकतानुसार अँगुली अथवा अँगूठे का प्रयोग करते हैं, जिससे सतह पर एक विशेष संरचना (टैक्सचर) उत्पन्न हो जाती है। इसके उपरांत उस अँगूठे अथवा अँगुली की छाप को स्याही, पेन अथवा ब्रश की सहायता से वांछित आकृति में परिवर्तित कर दिया जाता हैं। इस तकनीक से हम छापा द्वारा पशु-पक्षी, पेड़-पौधों, प्राकृतिक दृश्य, घरेलू वस्तुओं आदि के चित्र सुंदरता से बना सकते हैं। यह तकनीक बहुत ही सशक्त व सुरुचिपूर्ण लगती है। चित्र बनाने का यह माध्यम बहुत सरल एवं रुचिकर है।

चित्र 14.4: भालू, चीता और पक्षी

शीर्षक	:	**भालू, चीता एवं पक्षियाँ**
माध्यम	:	अँगूठे एवं अँगुलियों द्वारा छापा चित्रण
समय	:	समकालीन
संग्रह	:	व्यक्तिगत

सामन्य विवरण

प्रस्तुत चित्र में अँगूठे, हथेली और तलवों के द्वारा बनाई गई विभिन्न आकृतियाँ जीवंत और दिलचस्प हैं। प्रिंट की बनावट आयाम जोड़ती है और छवियों को जीवंत बनाती है। पेड़ की शाखा पर बसेरा करते पक्षियाँ को अँगूठे के निशान से बनाया गया है। ब्रश स्ट्राक के सम्मेलन में कुछ अँगूठे के निशानों को पक्षियों के जीवंत झुंड में बदल दिया है। भालू और बाध को क्रमशः तलवे और हथेली के निशान का उपयोग करके बनाया गया है। रूपरेखा को पूर्ण छवियों में विकसित करने के लिए ब्रश का उपयोग किया गया है। कार्य में संयोजन एवं रंग संयोजन उल्लेखनीय है। सबसे पहले

शीट पर अँगूठे और अँगलियाँ के निशान लगाए गए, फिर उन्हें जीवंत पक्षियों में बदलने के लिए ब्रश, स्ट्रोक का उपयोग किया गया। एक पेड़ की शाखा और पक्षियों के नीचे चित्रित पत्तियों ने सुंदर दृश्य को जीवंत बना दिया है। इसी तरह एक हथेली और एकमात्र छाप को क्रमशः एक अठखेलियाँ करते भालू और एक चौंका देने वाले बाध में बदल दिया गया।

पाठगत प्रश्न 14.4

1. अँगूठे छापा चित्रण तकनीक में छापे हेतु शरीर के किस अंग का प्रयोग किया जाता है?
2. अँगूठे छापा चित्रण तकनीक में रंग कैसे लगया जाता है?
3. अँगूठे छापा चित्रण तकनीक में पैन अथवा ब्रश का प्रयोग क्यों करते हैं?

क्रियाकलाप

कुछ सब्जियों का चयन कीजिए; जैसे- भिंडी, आलू, प्याज आदि। एक A4 आकार की सफेद आर्टशीट और पोस्टर रंग लीजिए। भिंडी, आलू, प्याज आदि के कटे हुए आकार का उपयोग करके डिजाइन बनाइए या छापा लीजिए। छापा लेने के लिए इन्हें गीले रंगों में डुबोइए।

आपने क्या सीखा

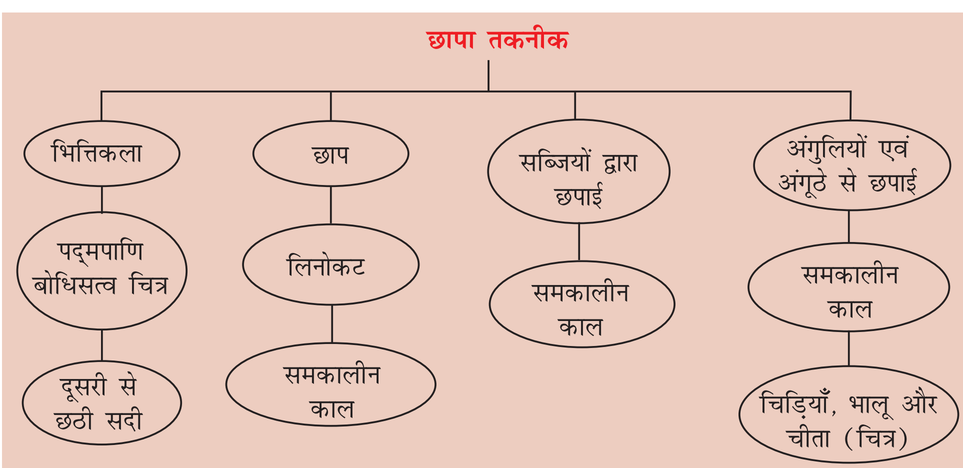

सीखने के प्रतिफल

शिक्षार्थी –

- आर्टवर्क में मुद्रण तकनीक का उपयोग करते हैं।
- अपने घरों, परिधानों का सजाने के लिए ब्लॉंक मुद्रण तकनीक का उपयोग करते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. भित्तिचित्र बनाने की तकनीक एवं माध्यम के विषय में अपने शब्दों में लिखिए।
2. छापाचित्र का आरंभ क्यों और कैसे हुआ?
3. छापाचित्र कितने प्रकार से बनाए जाते हैं?
4. छापाचित्र बनाने के लिए प्रयोग की जाने वाली सब्जियों की सूची बनाइए।
5. छापाचित्र के उपयोगों को विस्तार सूची तैयार कीजिए।
6. अक्षरों अंकों को उल्टा क्यों उकेरा जाता है?
7. छपाई की तकनीक किसी अन्य तकनीक से किस प्रकार भिन्न है?
8. पद्‌मपाणि बोधिसत्व का स्थल कौन-सी गुफा है?
9. इस भित्ति के लिए सफेद, हरा और पीला रंग कैसे बनाया गया?
10. पद्‌मपाणि बोधिसत्व की आकृति विशेष क्यों है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

14.1

1. (i) 30 गुफाएँ
2. (ii) टेंपरा माध्यम

14.2

1. छपाई की तकनीक में छापे विभिन्न सामग्री के बने होते हैं; जैसे- रबड़, लकड़ी, मोम एवं साबुन।
2. छपाई के इन छापों का प्रयोग प्रयुक्त सामग्री की मज़बूती के अनुरूप लंबे समय तक किया जा सकता है।
3. छपाई की मदद से चित्र को एक बार में पूरा किया जा सकता है।

14.3

1. इस तकनीक से बार-बार ठप्पे द्वारा छाप कर हज़ारों की संख्या में चित्र बनाए जा सकते हैं।
2. आलू, ज़मीकंद और शकरकंदी की मदद से अक्षर और अंक बनाए जाते हैं।

14.4

1. इस तकनीक में छपाई हेतु अँगूठे एवं अँगुलियों का प्रयोग किया जाता है।
2. इस तकनीक द्वारा चित्र बनाने के लिए अँगुली की नोक पर रंग लगाकर सतह पर छापा जाता है।
3. इस तकनीक में चित्र को पूरा करने के लिए पैन अथवा ब्रश का प्रयोग होता है।

शब्दकोश

जातक : बुद्ध के पूर्व जन्मों की कहानियाँ

लापीस लाजुली : रंग निपुणता के वर्णक के रूप में उपयोग करने के लिए एक गोंद

माहौल : आस-पास

निपुणता : ज्ञान की पूर्णता

सूक्ष्म ज्ञान : कौशल

मॉड्यूल - 4

भारत में आदिवासी और लोक कला

15. लोक एवं आदिवासी कला